पंचम अध्याय

साहित्येत्तर शिक्षा के संदर्भ में पत्रकारिता का योगदान

साहित्येत्तर शिक्षा में साहित्यिक विधाओं को छोड़कर शेष सभी विषय आते हैं, जैसे–विज्ञान, विधि, प्रशासन, वाणिज्य, संचार माध्यम, मानविकी आदि। वर्तमान काल में साहित्येत्तर सामग्री ही अधिक महत्वपूर्ण बनती जा रही है जीवन को सुचारु एवं उन्नत बनाने में इसका महत्व अब नकार नहीं सकते।

विज्ञान पत्रकारिता द्वारा शिक्षा :

आज विज्ञान ने थल, जल और वायु पर विजय प्राप्त कर ली है तथा उससे मानव जीवन का प्रत्येक क्षेत्र अत्यधिक प्रभावित है। इसलिए विज्ञान पत्रकारिता का क्षेत्र अब व्यापक हो गया है। इसमें विज्ञान–सम्बन्धी गतिविधियों का वर्णन रहता है और विज्ञान के किसी अंग–विशेष की चर्चा की जाती है। इसके साथ ही इसमें भारत की गरीबी, यातायात के साधनों का अभाव, आवास की विकट समस्या से जूझता देश रोजमर्रा की समस्याओं से पीडित मानवता को चित्रित किया जाता है तथा उसके वैज्ञानिक निराकरण शोधे जाते हैं । कुछ पत्र किन्हीं विशिष्ट वैज्ञानिकों से यह स्तंभ लिखवाते हैं। इसकी भाषा स्पष्ट, तर्कसंगत तथा सुगठित होती है । अतः शब्द जल्दी–जल्दी बदलते रहते हैंः नये शब्द आते–जाते हैं, रूढ़ होते रहते हैं और हम इसके बारे में जानकारी पा सकते हैं। इसमें विशिष्ट सूत्र एवं पदार्थो को विशिष्ट किन्तु निश्चित अर्थ में अभिव्यक्त किया जाता है। विज्ञान की भाषा में द्विकालिकता होने के साथ–साथ वह अपने व्यवहार में सार्वभौम अर्थतन्त्र की स्थापना करती है। इसी प्रकार, भाषा वर्गों की दृष्टि से वैज्ञानिक शब्दावली और उसमें प्रयुक्त शब्द विज्ञान के सन्दर्भ और प्रसंग में परिभाषित तथा एकार्थी होते हैं। इससे प्रासंगिक शब्दों का ज्ञान भी प्राप्त कर सकते हैं। विज्ञान नये–नये आविष्कार की शक्तियों को मनुष्य के हाथों

में सौंपता है। विज्ञान में नैतिक और अनैतिक कुछ भी नहीं होता, वह तो दोनों से तटस्थ होता है। विज्ञान चीर–फाड के कमरे में खडा एक यंत्र–मानव है, वह तो केवल फार्मूला (नियमों) को बोलता है। वैज्ञानिक सिर्फ शरीर पर काम करता है और केवल सत्य को देख सकता है।

'विज्ञान पुष्प', विज्ञान वैचारिकी आदि अनेक पत्रों द्वारा विज्ञान पत्रकारिता को समृद्ध किया जा रहा है। कुछ विज्ञान पत्र किन्हीं विशिष्ट वैज्ञानिकों से ही विज्ञान पत्रकारिता लिखवाते हैं। चर्चित घटनाक्रम तो विज्ञान–जगत् की किसी महत्वपूर्ण उपलब्धि जैसे आर्यभट्ट, भास्कर इन्सेट श्रृंखला के उपग्रह छोड़ा जाना, अणु अंतःस्फोट या ऐसी ही घटना की चर्चा या विश्व के किसी अन्य देश की वैज्ञानिक उपलब्धियों के बारे में शिक्षा

(जानकारी) पा सकते हैं।

विधि से संबंधित पत्रकारिता का स्वरूप कानून से संबंध है। इसकी शब्दावली अत्यन्त तकनीकी होने के कारण और उसका सम्बन्ध कानूनी प्रक्रिया एवं अदालतों से जुड़े होने के कारण जनसामान्य के लिए जटिल प्रतीत होता है। कानून एवं विधि की भाषा में मुख्यतः तकनीकी शब्दावली, विशिष्ट पद विन्यास, लम्बी और संयुक्त वाक्य–रचना, कानूनी प्रक्रिया की अन्विति आदि बातों के बारे जानकारी पा सकते हैं।

वाणिज्य–व्यवसाय द्वारा शिक्षा :उद्योग, जन–जीवन में असाधारण महत्व का है। उत्पादित हर वस्तु उपभोक्ता तक वाणिज्य–व्यवसाय के माध्यम से ही पहुँचती है। वाणिज्यिक के अन्तर्गत व्यापार, वाणिज्य, बाजार, बीमा, बैंकिंग तथा निर्यात–आयात आदि क्षेत्रों का समावेश किया जाता है। इसके साथ ही शेयर, जिंस, सराफा आदि नाना उत्पादन क्षेत्रों के बाजार भावों के साथ प्रमुख आर्थिक गतिविधियों के बारे में शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। **इसलिए इसे देश के आर्थिक**

जीव दर्पण कहते हैं। इसके विषय और सन्दर्भ के अनुसार पारिभाषिक शब्दावली या भाषिक संरचना की विशिष्टता देकर प्रस्तुत करता है।

वाणिज्य, बीमा,व्यवसाय तथा बैंक आदि क्षेत्रों से सम्बन्धित शब्दावली निश्चित है और इन क्षेत्रों में वह निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होती हैं इन क्षेत्रों में प्रयुक्त भाषा की वाक्य रचना भी साहित्यिक वाक्य रचना से काफी भिन्न रहती है जैसे तेल की धार ऊँची, अरहर सुस्त, काबुली उछला, सोने में उछाल, चाँदी मंदा इस प्रकार के वाक्यांश साहित्यिक पत्रकारिता से वाणिज्यिक पत्रकारिता को अलगाते हैं। शेयर बाजार और निर्यात–आयात व्यापार आदि में प्रयुक्त भाषा जनसामान्य की समझ से परे है।

संचार माध्यम द्वारा शिक्षा :

'संचार' मानव के विकास में अत्यंत सहायक है। यह लोगों को जागरूक बनाता है, अंधविश्वास और रूढ़ियों को दूर भगाता है जिससे विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। वास्तव में, संचार जन–जन को जागृत करके उन्हें नई गति व नई दिशा देता है।

उसे सोचने के लिए मस्तिष्क और विचारने के लिए हृदय दिया है। इस विचारधारा केकारण वह नए–नए आविष्कार कर रहे हैं इसमें संचार साधनों की भूमिका अहम है।

इंटरनेट एक ऐसे व्यापक हाइवे के रूप में सामने आया है जिसने दूरियों को लगभग समाप्त कर दिया है। इंटरनेट दूरसंचार और उपग्रह प्रौद्योगिकी की मदद से लाखों कंप्यूटरों का एक ऐसा सूचना–तंत्र है, जिसमें पूरे के पूरे पुस्तकालय, रेडियो, दूरदर्शन के ढेरों चैनल,समाचार–पत्र, पत्रिकाओं के अलावा कई और भी जानकारियाँ उपलब्ध हैं।

हमें कम्प्यूटर के सामने बैठकर 'की–बोर्ड' की सहायता से हम दुनियाभर की जानकारियाँ प्राप्त कर सकते हैं। जैसे ई–मेल, ई–कॉमर्स, टेली कॉन्फ्रेन्सिंग एवं वीडियो आदि। मानव जीवन में जनसंचार महत्वपूर्ण बदलाव लेकर आया है।

रेडियो ने शिक्षा की बड़ी सेवा की है। उसके माध्यम से लगातार अच्छी कविताओं, कहानियों का प्रसारण होता रहा है। अनेक महत्वपूर्ण साहित्यिक और सांस्कृतिक समारोहों को आकाशवाणी ने अपने से जोड़ा यानी आकाशवाणी ने शिक्षा के प्रचार–प्रसार से बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बहुत महत्वपूर्ण साहित्यकारों को रेडियो में खींचा और उन साहित्यकारों के कारण ही शिक्षा जगत में रेडियो एक सम्मानित संस्था बना रहा।

मानवीय संवेदन, नवीन सौंदर्यबोध, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक व्यवस्था विरोध के कारण आदि को व्यक्त करने में रेडियो का स्थान महत्वपूर्ण है। कविताएँ, कहानियाँ, लेख अब भी पढ़े जाते हैं और प्रायः अच्छे विषयों पर चर्चाएँ भी होती हैं, किन्तु अब विशेषज्ञों का चुनाव कार्यक्रम अधिकारी की सुविधा के अनुसार होता है।

टी.वी, मीडिया का सर्वाधिक नया तथा सशक्त क्षेत्र है। यह शक्तिशाली और आकर्षक प्रसार माध्यम है। इसके तीन उद्देश्य माने जाते हैं– मनोरंजन, शिक्षा, प्रचार। पहले दूरदर्शन का प्रारंभ हुआ था तो केवल दिन में कुछ शैक्षिक तथा मनोरंजक कार्यक्रम दिखाए जाते थे। फिर दूरदर्शन का विकास बहुत तेजी से हुआ और अब चौबीस घंटे कोई न कोई कार्यक्रम दिखाया जाता है।

ज्ञान–विज्ञान के चैनलों में डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्राफिक चैनल आदि बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। अधिक आयुवर्ग के लोग या जो धार्मिक–प्रवृत्ति के होते हैं, दूरदर्शन पर ट्रान्जि जैसे संस्कार, आस्था आदि चैनल देखकर धार्मिक कार्यक्रम भजन, प्रवचन द्वारा लाभान्वित होते हैं। यह धार्मिक, राजनीतिक या अन्य प्रवचनों

की तरह सीधे–सपाट ढंग से उपदेश या शिक्षा नहीं देती हैं, वह बिना उपदेशात्मक हुए हमारे संस्कारों को छूती या बदलती हैं काव्यशास्त्र में इसे 'कांतासम्मित उपदेश' कहा गया है, यह तभी संभव है, जब उस कहानी का प्रचार–प्रसार हो, यानि किसी भी माध्यम से पाठक तक पहुँचे। कहानी में मनोरंजन भी होता है, शिक्षा भी होती है और वह अपने प्रचार–प्रसार की आकांक्षा भी रखती है।

स्वास्थ्य, पर्यावरण शिक्षा, स्वरोजगार तथा अन्य अनेक संदर्भों में वह शिक्षा देने का कार्यक्रम चलाता रहता है। एक सशक्त प्रचार माध्यम होने के नाते दूरदर्शन अपनी शिक्षा या उद्देश्य को बहुत व्यापक स्तर पर फैला पाता है। इसमें कुछ धारावाहिक गंभीर विषय की संकल्पना लेकर अच्छी शुरुआत करते हैं। दूरदर्शन के जरिए 'महाभारत' और 'रामायण' जैसे महान् काव्य ग्रंथों की कथा बड़े प्रभावशाली ढंग से आम जन तक पहुँचती है। इतिहास तथा पुराण के अनेक मूल्यवान संदर्भ जीवंत हो उठे। दूसरी ओर 'गणादेवता', आई 'कर्मभूमि', 'मैला आँचल', 'रथचक्र', 'मृत्युंजय', 'तमस', 'रागरबारी', 'श्रीकांत','चरित्रहीन', 'निर्मला', 'मालगुडी डेज'आदि महत्वपूर्ण आधुनिक साहित्य को भी संप्रेषनीय बनाया गया।

संचार के क्षेत्र में कंप्यूटर का भी महत्वपूर्ण योगदान है। बैंक, रेलवे स्टेशन, हवाई अड्डे, डाकखाने, बड़े–बड़े उद्योग, कारखाने,व्यवसाय, हिसाब–किताब तक कम्प्यूटराइज हो गए हैं। 20वीं सदी में कंप्यूटर क्षेत्र में क्रांति आई है। प्रत्येक क्षेत्र का कंप्यूटरीकरण हो गया है।आजकलकंप्यूटर के बिना जिन्दगी अधूरी है।

संचार के क्षेत्र में मीडिया और समाचार–पत्रों की भी विशेष उपयोगिता है। रेडियो, ट्रान्जिस्टर, टेलीविजन एवं इंटरनेट के माध्यम से संसार को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया गया है, किंतु समाचार–पत्र का अपना विशेष स्थान है। इस जनतंत्र में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी बात कहने का अधिकार है।

समाचार–पत्र प्रत्येक नागरिक के इस अधिकार की पूर्ति करते हैं। समाचार–पत्रों से हमारा सर्वांगीण विकास होता है।

दूरसंचार की व्यवस्था में तकनीकी प्रगति के साथ विज्ञापन को विभिन्न आयाम मिल गए। होर्डिंग, भित्तिचित्र लेखन, मुद्रण तथा उसके बाद रेडियो, दूरदर्शन और अब इंटरनेट पर विज्ञान की सुविधा उपलब्ध हैं। औद्योगिक क्रांति से लेकर वर्तमान सूचना तक विज्ञापन की भूमिका निर्णायक रही है। वस्तुतः यह सभी क्रांतियों का पोषक तत्व रहा है, जिससे शिक्षा का प्रचार–प्रसार संभव है।

नईतकनीकों से शिक्षा का प्रचार–प्रसार :

इंटरनेट के माध्यम से कई नई–नई तकनीकें विकसित हो गई हैं। जैसे–

टचतकनीक : स्पर्श मात्र से ही मानव–मानव के बीच हर प्रकार की संवेदना और उसका उपयोग किया जाने लगा है। अब स्पर्शबोध से तन–मन की अंतर्दशा का संज्ञान किया जा रहा है।

ब्लू टूथ तकनीक :इसके अंतर्गत दो उपकरणों को परस्पर जोड़ा जाता है। जैसे– मोबाइल को कंप्यूटर से। प्रायः सौ किलोमीटर क्षेत्र के सभी इलेक्ट्रानिक सूत्र इस प्रणाली द्वारा कंप्यूटर से स्वतः संबद्ध हो जाते हैं। इसके द्वारा शिक्षा से संबंधित पत्र, चित्र, रिपोर्ट आदि भी आसानी से भेज सकते हैं।

वैप तकनीक –वायरलेस एप्लीकेशन प्रोटोकाल **(W.A.P)**ऐसी तकनीक है, जिसका प्रयोग मोबाइल पेजर स्मार्ट फोन और रेडियो को सीधे इंटरनेट से जोड़ देता है।

N.F.Cतकनीक निया फील्ड कम्यूनिकेशन तकनीक –

इसमें भी दो उपकरणों के जोड़ने के लिए तार की ज़रूरत नहीं होती। इनके द्वारा फाइल तथा आंकड़ों का अंतरण किया जा सकता है।

रिसोर्स डिस्क्रिप्शन फ्रेम वर्क –यह किसी वैबसाइट पर उपलब्ध सूचनाओं की जानकारी देती है इससे वैबसाइट के साइट मैप, वेबसाइट परिवर्तन की

तिथियाँ,सर्च इंजन द्वारा खोजे गए शब्द और वेब पेज की सूचनाओं को विवरण प्राप्त होता है।

वायस ओवर इंटरनेट प्रोटोकाल–इसका प्रयोग इंटरनेट टेलीफोन के लिए होता है। ये सस्ते पड़ते हैं। यदि साउंड कार्ड, स्पीकर, इंटरनेट कनेक्शन और माइक्रोफोन हमारे पास है तो स्काई को डाउन लोड करके हम कहीं भी कॉल कर सकते हैं। इसमें साक्षात्कार, शिक्षा से संबंधित विषय पूछना आदि कर सकते हैं।

जनरल पैकेट रेडियो सर्विसेज तकनीक –

इसमें सेलफोन हर समय नेट से जुडा रहा है। इससे ई–मेल की तुरंत जानकारी मिल जाती है। हम मोबाइल पर ही वेब ब्राउजिंग कर सकते हैं।

पेन ड्राइव –इसे थंब, फलैश या 'रिमूवल डेस्क भी कहते हैं। इसमें शिक्षा से संबंधित जानकारी या किसी सूचना को भंडार के जैसे रख सकते हैं।

एनीमेशन – यह फिल्मांकन की नई पद्धति है जिसमें चित्रकारी के माध्यम से ही ऐक्शन फिल्म का सारा कार्य कराया जाता है। एनीमेशन द्वारा सेट बनाए बिना एक से एक भीषण, भयानक, विराट दृश्य रूपायित किए जा सकते हैं। जैसे– प्रलय घटित होना, ग्रहों–उपग्रहों का टूट–टूटकर अलग हो जाना एवं ज्वालामुखी का विस्फोट इत्यादि। इसमें पहले एक ढांचा तैयार किया जाता है, फिर कुछ स्थूल आकृतियाँ बनाई जाती हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि संचार माध्यमों से जुड़ी हुई नूतन प्रविधियाँ निरंतर अपने को बदलती जा रही हैं और बहुत तेज़ी से संचार एवं शिक्षा के प्रचार–प्रसार कर रहे हैं।

5.1 ई–गवर्नेंस, ई–जर्नलिज़्म और उसकी लोकप्रियता :

इलैक्ट्रानिक्स प्रशासन :सरकार और इसकी विभिन्न एजेन्सियाँ देश में मुख्य सेवा उपलब्ध कराने का कार्य करती हैं सूचना तकनीक को विशेषकर कम्प्यूटरों

के प्रयोग को विभिन्न मंत्रालयों और केन्द्र एवं राज्य सरकारों के विभिन्न विभागों, जिला प्रशासन, नगरपालिका सेवाओं और ब्लॉक अथवा पंचायत स्तर पर बढ़ावा दिया जा रहा है। यह एक अभिनन्दनीय कदम है।

इंटरनेट ने एक नया सूचना संसार हमारे सम्मुख खोला हैं यह दुनिया के लिए एक खिड़की की तरह है। टेलीविजन ने विश्व बाजार का जो नया परिदृश्य निर्मित किया है, उसे इंटरनेट ने और विस्तृत कर दिया है। जनसंचार माध्यम और प्रौद्योगिकी के संदर्भ में देखें तो आज समाचार–पत्र, रेडिया, टेलिविजन, फिल्म आदि एक साथ इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। स्वाभाविक है कि इन सबकी अच्छाई–बुराई भी एक साथ यहाँ मिलेंगी।

आज कोई भी व्यक्ति ज्ञान के इस अथाह सागर से दुनिया के किसी भी कोने में बैठकर किसी भी विषय पर घर बैठे सूचना प्राप्त कर सकता है। यात्रा के समय में भी यह संभव है।

इंटरनेट की लोकप्रियता के कारण कई हैं, यथा –

- ❖ यह सूचना –प्राप्त का सहज–सरल और आकर्षक माध्यम है।
- ❖ विश्व के सभी देशों में कम्प्यूटर निरंतर सस्ते होते जा रहे हैं कीमतों की कमी के चलते इंटरनेट–सुविधा उच्च वर्ग की पहुँच में है।
- ❖ समय की कमी।
- ❖ किताबों और शोधपत्रों की कीमतों में वृद्धि और इसकी तुलना में कुल मिलाकर कम खर्चीला माध्यम।
- ❖ न कागज–स्याही का झंझट, न पुराने जमाने की डाक व्यवस्था का टरकार। हमारे लिए चाहिए तो प्रिंट निकाल लें।
- ❖ समृद्ध ज्ञान–भंडार में से मनचाही सामग्री को कम कीमत में जब चाहे तब प्राप्त करने की सुविधा।
- ❖ सूचना, ज्ञान और मनोरंजन के साझे उपयोग की आवश्यकता और सुविधा।

- ❖ 'ब्राउजिंग' अर्थात् ज्ञानलोक का संचार, ई–बैंकिंग, ई– वाणिज्य, ई–प्रशासन, खेल, चैट–गपशप, मनोरंजन, ई–कान्फ्रेंस, शिक्षा, योगासन, पाक कला, अध्यात्म, बागवानी आदि इसमें हैं। केवल 'सर्च' करने की जरूरत है। यह अजीब दुनिया देश–काल के बंधन के बिना सबकी अपनी है और इस विचित्र संसार के निर्माता हम सब विश्व–मानव हैं।
- ❖ **वेब पर अपार शिक्षण सामग्री और ज्ञानवर्धक साहित्य उपलब्ध है। सभी विषयों की एनसाइक्लोपीडिया, सभी देशों के एटलस, मानचित्र, सभी शहरों के रास्तों के मानचित्र, संस्कृति, इतिहास, साहित्य और जो कुछ भी हम जानना चाहते हैं, वह सब कुछ यहाँ मौजूद हैं।**

ई–शॉपिंग – अब घर बैठे खरीददारी भी एक प्रकार के मनोरंजन का माध्यम बन गया है। इसके माध्यम से दुनिया के किसी भी शहर में स्थित सुपर मार्केट, दुकान श्रृंखला या बाज़ार के वेब पृष्ठों पर जाकर खरीददारी कर सकते हैं।

विकास के आधार सूत्र :

सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग द्वारा राष्ट्रीय एवं सामाजिक विकास की रूपरेखा निम्नवत दस सूत्रों द्वारा प्रस्तुत की जा सकती हैं–

1. ई–विजन (राष्ट्रीय एवं सामाजिक भविष्य की रूपरेखा)
2. ई–इन्नोवेशन(राष्ट्रीय उन्नति का प्रतीक)
3. ई– इमेज(राष्ट्रीय व सामाजिक विकास का प्रतिरूप)
4. ई–इंफ्रास्ट्रक्चर(संरचनात्मक विकास)
5. ई–गवर्नेंस(आदर्श,प्रभावी एवं पारदेशी प्रशासन)
6. ई–एन्टरप्रिन्योर(उद्देश्य प्रगति के नये अवसर)
7. ई–लर्निंग(राष्ट्रीय व सामाजिक विकास का आधार)
8. ई–कल्चर(राष्ट्रीय एवं सामाजिक एकता का सूत्रपात)

9. ई–बिजनेस(अंतराष्ट्रीय व्यवसायिक)

10. ई–इकोनॉमी(आर्थिक प्रगति के नये अवसर)

'ई' का अभिप्राय ' इलेक्ट्रॉनिक' है। ई–पत्रकारिता एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ प्रतिदिन नए आविष्कार के बारे में दिखाते हैं। रोज़ नई प्रौद्योगिकी बदलती रहती है, जिसके कारण हम नित नई सुविधाओं से सम्पन्न होते जा रहे हैं। आज इस तकनीकी के कारण ई–मेल का प्रचलन बढ़ता जा रहा है, व्यापार ई– कामर्स बन गया है तथा प्रशासन ई–गवर्नेन्स के माध्यम से सुशासन के रास्ते पर अग्रसर है।

ई–ज्युडिशियरी, ई–एजूकेशन, ई.एफ.आई.आर तथा टेली–मेडिसिन ऐसी सुविधाएँ होंगी जिनके माध्यम से न्यायिक कार्यों में होनेवाली देरी का निदान होगा, दूर दराज बैठे लोगों को उत्कृष्ट शिक्षा प्राप्त हो सकेगी, लोग अपनी शिकायतों तथा दुर्घटनाओं की सूचनाएँ द्रुत गति से पुलिस स्टेशनों को भेज सकेंगे तथा उपचार की सुविधाएँ भी दूरस्थ क्षेत्रों में सुलभ हो सकेंगी। इंटरनेट के द्वारा इस प्रकार कुशलता के साथ द्रुत गति से नागरिकों की समस्याओं के समाधान से देश के सर्वांगीण विकास में गुणात्मक सुधार आएँगे।

आज सूचना क्रांति के दौर में सूचना प्रौद्योगिकी महामार्ग अथवा इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी सुपर हाइवे का बोलबाला है। इसके समुचित उपलब्धता के आधार पर कृषि उत्पादन एवं ग्रामीण विकास को गतिशील बनाया जा सकता है जिससे किसान आवश्यक जानकारी प्राप्त करके उन्नत किसम के बीज, कृषि उपकरण आदि के लिए समुचित लागत मूल्य निवेश कर सके एवं उन्हें फसल का पूरा लाभ प्राप्त हो सके।

नेशनल सेन्टर फॉर सॉफटवेयर द्वारा माइक्रोसॉफट के सहयोग से भारतीय भाषाओं में संचार व्यवस्था के लिए विन्डोज–2000 पर आधारित एक विशिष्ट सॉफटवेयर ''वार्तालाप'' प्रस्तुत किया गया है, जो अनेक भारतीय भाषाओं में

संचार व्यवस्था स्थापित करने में सक्षम है। आज इसके उपयोग द्वारा मुख्यतः निम्न सेवाएँ उपलब्ध कराना संभव है।

- ❖ इंटरनेट आधारित त्वरित दूरसंचार व्यवस्था,
- ❖ व्यावसायिक उपयोग एवं विश्वसनीयता,
- ❖ शिक्षा प्रसार के लिए उपयोग एवं विद्यार्थियों से प्रश्नोत्तर,
- ❖ स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं में उपयोग,
- ❖ उद्योग एवं व्यवसाय में बहुउद्देश्यीय उपयोग,
- ❖ अनेक भारतीय भाषाओं में ई–मेल,
- ❖ इंटरनेट के माध्यम से कान्फ्रेन्स सुविधा,
- ❖ सरकारी कामकाज में उपयोग।

ई–चौपालः सूचना क्रांति की एक सुनहरी रेखा " ई–चौपाल" है जिसके अन्तर्गत वर्ष 2005 से गाँवों के किसानों को इन्टरनेट के द्वारा कृषि सम्बन्धी महत्वपूर्ण जानकारी दी जाने लगी है।

ऑन लाईन सरकारी कामकाज (ई–गवर्नेंस) की यह लोकतांत्रिक सरकार कामकाज के हर स्तर पर जनता और प्रशासन के बीच आने वाली बाधाओं को दूर करने का सर्वोत्तम विकल्प है। दिसम्बर 2002 में तत्कालीन सूचना टेक्नोलॉजी और संचार मंत्री प्रमोद महाजन ने देश के सभी राज्यों के एक–एक जिले में ई–गवर्नेंस परियोजनाएँ लागू करने के लिए 309 करोड़ रुपए लागत की महत्वाकांक्षी योजना का उद्घाटन किया। यह परियोजना काफी हद तक कर्नाटक की भूमि परियोजना से प्रेरणा लेकर प्रारम्भ की गई जिसमें नागरिकों को ज़मीन सम्बन्धी अभिलेख ऑनलाइन उपलब्ध कराए जाते हैं। इन परियोजनाओं के फलस्वरूप जनता अधिकार संपन्न बनेगी और राज्यों को कार्यकुशलता तथा पारदर्शिता की दिशा में आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी।

यह तो बहुत स्पष्ट दिखाई देती है कि ई–गवर्नेंस प्रशासन को जनता के लिए अनुकूल, पारदर्शी और जवाबदेह बनाने की दिशा में एक जोरदार प्रयास है। कर्नाटक,केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश ने अपने प्रशासनिक तंत्र को चुस्त बनाया है। इसके लिए कई अभिनव ई–गवर्नेंस परियोजनाएँ प्रारंभ की गई हैं।

भूमि परियोजना की एक महत्वपूर्ण बात यह है कि आज कर्नाटक के 67 लाख किसान इसके दायरे में आ गए हैं और भू–स्वामित्व सम्बन्धी लाखों अभिलेख इसमें दर्ज हैं। जनता के साथ वित्तीय सहायता देने वाली अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसियों ने भी इसको सराहा है। कर्नाटक के विभिन्न भागों से मिली प्रतिपुष्टि और सर्वेक्षण के निष्पक्ष विश्लेषण से इस बात की पुष्टि हो जाती है कि लोग इस परियोजना से संतुष्ट हैं क्योंकि उन्हें न तो राजस्व विभाग के कर्मचारियों की उपेक्षा और अफसरशाही का सामना करना पड़ता है और न रिश्वत देनी पड़ती है। इस परियोजना के लागू होने के बाद किसान को केवल 15 रुपए का शुल्क एक बार देना होता है और उसके बाद वे राज्यभर में फैले 168 तालुक कार्यालयों में स्थित भूमि केन्द्रों से बिना किसी देरी या परेशानी के ज़मीन सम्बन्धी दस्तावेज की कम्प्यूटर से निकली प्रतिलिपि प्राप्त कर सकते हैं। भूमि सम्बन्धी अभिलेख को देखने के लिए इन भूमि केन्द्रों में लगे कम्प्यूटरों के टच स्क्रीन को छूते ही सूचना प्राप्त कर सकते हैं। इस परियोजना का सबसे बड़ा फायदा सेवा की गुणवत्ता और लाभार्थियों की संतुष्टि है।

तमिलनाडु के मदुरै जिले में एन–लॉग नाम की एक निजी कम्पनी आप्टिकल फाइबर नेटवर्क का फायदा उठाकर लोकल लूप टेक्नोलॉजी के जरिए दूरसंचार सम्बन्धी सेवाएँ किफायती दर पर उपलब्ध करा रही है। इससे निजी उद्यमियों को ई–गवर्नेंस समेत बहुत–सी सेवाएँ शुरू करने में मदद मिली है।

केरल में नागरिकों को करों के भुगतान में होने वाली परेशानियों को दूर करने के लिए फ्रेंड्स(फास्ट रिलाएबल इन्स्टेंट, ऍफीशेंट नेटवर्क फार डिस्बर्समेंट सर्विसेज) नाम की सूचना टेक्नोलॉजी पर आधारित परियोजना शुरू की गई है। इससे बिचौलियों, रिश्वतखोरी, देरी और लम्बी लाइनों को समाप्त करने में मदद मिली है। यह एक केन्द्रकृत संग्रह काउंटर है जिसमें लाइसेंस के नवीकरण शुल्क से लेकर लगभग हर तरह के कर तथा उपयोग शुल्क जमा कराए जा सकते हैं। एक वर्ष के अन्तराल में यह परियोजना केरल के 12 जिलों के 1.3 करोड़ लोगों की पहुँच के दायरे में आ गई है। आजकल ''अक्शया'' नाम की सूचना टेक्नोलॉजी पर आधारित परियोजना है। इससे वोट्टर्स आइडी कार्ड, आधार कार्ड, लाइसेंस के नवीकरण आदि कई विषय इससे ही प्राप्त कर सकते हैं।

आँध्र प्रदेश की ई–सेवा परियोजना ''सौकार्यम'' लोगों में बड़ी लोकप्रिय हो गई है। इसे विशाखापट्टनम शहर के बंदरगाह में लागू किया है। इसके माध्यम से संपत्ति कर का ऑन लाइन भुगतान कर सकते हैं तथा सरकार और स्थानीय निकायों की कई परियोजनाओं का ब्यौरा देखा जा सकता है। ई–सेवा केन्द्र नागरिकों और अफसरशाही के बीच व्यक्तिगत सम्पर्क समाप्त करने की दिशा में एक नया प्रयोग है। ई–सेवा केन्द्र में कोई भी नागरिक बिक्री कर बीमा प्रीमियम,संपत्ति कर, पानी–बिजली व टेलीफोन बिल का एक साथ भुगतान कर सकता है, इसी तरह 63 प्रकार के कर और शुल्क स्वीकार करते हैं।

आँध्र प्रदेश में दूर–दराज के ग्रामीण क्षेत्रों को सूचना टेक्नोलॉजी के दायरे में लाने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयास के अन्तर्गत एक ब्रॉड बैंड पर आधारित ग्रामीण परियोजना 'साइबर ग्रामीण' शुरू की गई है। साइबर ग्रामीण के जरिए ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट ब्रॉड बैंड का उपयोग करके ग्रामीण अर्थव्यवस्था को दृढ़ताप्रदान करने के लिए कई तरह की सेवाएँ और सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती है।

स्वर्ण भारत ट्रस्ट(गैर –सरकारी संगठन) द्वारा शुरू की गई इस महत्वाकांक्षी परियोजना का उद्देश्य देश के ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की सेवाएँ उपलब्ध कराने वाले केन्द्र स्थापित करना है।

इसमें टेलीफोन सुविधा, टेलीमेडिसीन सेवा,दूरस्थ शिक्षा, उच्च गति इंटरनेट, ई–मेल, फुटकर बिक्री, वीडियो कांफ्रेंसिंग, डिजिटल मनोरंजन,सरकारी सेवाएँ उपलब्ध कराना और सूचना देना आदि शामिल हैं।

''दि हिन्दू'' से——>

THE HINDU

THIRUVANANTHAPURAM, SUNDAY, JULY 27, 2014.

PM launches e-governance platform

Amit Baruah

NEW DELHI: Prime Minister Narendra Modi launched an online platform mygov.nic.in to engage citizens in the task of "good governance" (*surajya*) as he completed 60 days in office on Saturday.

MyGov is a technology-driven platform that would provide people with the opportunity to contribute towards good governance.

" The platform has been divided into various groups namely Clean Ganga, Girl Child Education, Clean India, Skilled India, Digital India, Job Creation," arelease said.In a video address on his website, Mr. Modi Using the Hindi word " khai", or ditch, to describe the gap, Mr. Modi, who appeared to be speaking in his office, stressed that democracy could not succeed without people's participation. "Political participation cannot be limited to balloting."

MAGAZINE
- 4 Pages
CLASSIFIEDS
- 4 Pages

प्रधान मंत्री ने ई–गवर्नेंस प्रदर्शित किया :

अमित बारुह **नई दिल्लीः**

प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोडी ने शनिवार के दिन , नागरिकों के लिए"mygov.nic.in" प्रक्षेपित किया जिसके द्वारा सुराज्य हेतु स्थापित किया जैसे ही उन्होंने 60 दिनों में पूरे किए ।

लोगों को स्वाराज्य प्राप्त करने के लिए mygov एक तकनीकी मंच है, जिससे उनको एक मौका पा सकते हैं।

लोकार्पण में यह बताया है कि –''यह मंच विभिन्न समूहों में विभाजित किये हैं जैसे–क्लीन गंगा (साफ गंगा),गेंल चाइल्ड एटूकेशन(लड़की के लिए शिक्षा), क्लीन इंडिया (साफ भारत), स्कील्ड इंडिया (कौशल भारत), डिजिटल इंडिया(डिजिटल भारत), जाब क्रियेशन (नौकरी के लिए नवनिर्माण)। श्री. मोडी जी ने उनके वेबसाइट के वीडियो पता में दरार को वर्णन करने के लिए हिन्दी शब्द '' खाय '' या खाईर का प्रयोग किया है। श्री मोडीजी ने अपने दफतर में चर्चा करते समय इन बातों पर ज़ोर दिया कि लोगों की भागीदार के बिना जनतंत्र में सफलता प्राप्त करना बेहद मुश्किल होता है। मतदान में राजनीतिक भागीदरी को सीमित नहीं कर सकते।''

ई–कॉमर्सः आधुनिक व्यापार की तेजधार – विभिन्न व्यापारिक सहयोगियों, ग्राहकों, उपभोक्ताओं आदि के साथ व्यापारिक सूचनाओं का आदान–प्रदान, उन्नत सूचना प्रौद्योगिकी व कम्प्यूटर नेटवर्कों की सहायता से और इलेक्ट्रानिक माध्यम द्वारा करना ही ई–कामर्स कहलाता है। सूचना प्रौद्योगिकी की सार्वभौमिकता, इंटरनेट, इंट्रानेट व एक्स्ट्रानेट को संयुक्त रूप से प्रयोग में लाकर, ई–कॉमर्स ने व्यापार को एक नई दिशा व गति प्रदान की है। ई– कामर्स न केवल कागजों को विस्थापित कर इलेक्ट्रॉनिक स्वरूप देता है बल्कि बहुत सारी अनावश्यक गतिविधियों को हटाकर व्यापार को इलेक्ट्रानिक

वातावरण प्रदान करता है। कम्प्यूटर नेटवर्कों, इंटरनेट वर्ल्ड वइट वेब से लेकर ईडीआई (इलेक्ट्रानिक डेटा इन्टरचेंच), ई–मेल,(इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर) आदि उपयोगी तकनीकों को समाविष्ट कर व्यापारिक कार्यकलापों को सम्पादित करने में ई–कॉमर्स एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इसके फलस्वरूप व्यापार करने के तरीकों में पूर्ण रूप से बदलाव आ जाता है।

ई–कॉमर्स का उपयोग मात्र कार्यालय के कामकाज, मनोरंजन एवं सूचना के स्त्रोत तक ही सीमित नहीं रह गया है। इसकी परिधि में अब बैंकिग लेन–देन, खरीददारी, संचार, शिक्षा, कारोबार, उत्पादन कार्य आदि अनेक क्षेत्र आ चुके हैं। ई–कॉमर्स के प्रसार और इसके संचालन के लिए आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त विशेषज्ञों की भावी मांग के कारण बड़ी संख्याओं में युवाओं ने ई–कॉमर्स पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेना शुरू कर दिया है। यद्यपि आज भी देश में मांग के अनुरूप ई–कॉमर्स प्रशिक्षित कर्मियों का अभाव है, फिर भी निजी क्षेत्र के संस्थानों द्वारा इस प्रकार के लघुवधि एवं दीर्घावधि पाठ्यक्रम प्रमुख शहरों में उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इसी वजह से भविष्य में पर्याप्त संख्या में ई–कॉमर्स विशेषज्ञ इस समूचे तंत्र के संचालन के लिए मिल सकेंगे।

तकनीकी रूप से अधिक अद्यतन इस विद्या को पश्चिमी देशों में एम–कॉमर्स के नाम से जाना जाता है। हमारे देश में एम–कॉमर्स अथवा मोबाइल कामर्स की उपयोगिता इसके अधिक संविधाजनक होने के कारण आम लोगों में अधिक देखी जा सकती है। इसके लिए मात्र इंटरनेट से जुड़े बेहतार मोबाइल फोन की एकमात्र आवश्यकता होती है।

एम–कॉमर्स की सॉफटवेयर विशेषता के अनुसार इसका उपयोग सफलतापूर्वक वित्तीय सेवाओं यानि मोबाइल बैंकिंग, संचार सेवा (बिल भुगतान एवं लेख समीक्षा), खुदरा विक्रय के भुगतान तथा सूचना सेवा, शेयर समाचार, खेल ट्रैफिक, मौसम आदि हेतु ही मूल रूप से किया जा सकता है। इसके

परिचालन एवं पूर्ण उपयोग के लिए दक्ष एम–कामर्स विशेषज्ञों की आवश्यकता भी जरूरी होगी।

एम–कॉमर्स की उपयोगिता का लाभ विक्रेताओं के साथ उपयोगकर्ताओं को भी मिलता है। विभिन्न उत्पादों से संबंधित ऐसी वेबसाइट की सूची में एम–कॉमर्स के द्वारा उपयोगकर्ताओं को बड़ी सरलता से अपने मोबाइल फोन पर ही उपलब्ध हो जाती है। ऐसे में कहीं भी और किसी समय वे अपनी आवश्यकतानुसार ऑर्डर दे सकते हैं और क्रेडिट कार्ड के माध्यम के साथ–साथ भुगतान भी कर सकते हैं इससे समय की बचत के साथ शारीरिक श्रम की बचत हो जाती है।

ई–कॉमर्स से होने वाले लाभ :ई–कॉमर्स ने व्यापारियों , कम्पनियों के अलावा उपभोक्ता के समक्ष अनगिनत विकल्प प्रस्तुत किए हैं। ई–कॉमर्स से कम्पनियाँ, विक्रेता या व्यापारियों का लाभान्वित होने के साथ–साथ ग्राहक का भी लाभ ही लाभ है–

उपभोक्ता के परिप्रेक्ष्य में होने वाले कुछ लाभ इस प्रकार हैं–

- किसी भी समय खरीददारी करने का लाभ।
- अनावश्यक वस्तुओं के संग्रहण की आवश्यकता में कमी।
- वांछित वस्तुओं व सेवाओं के चयन में सुविधा।
- व्यापारिक प्रतिस्पर्धा का अधिक लाभ।
- बाजारों को समय सीमा व भौगोलिक सीमाओं में विस्तार।
- उत्पादों की विशेषताओं व दामों का तुलनात्मक अध्ययन करना आसान।
- इलेक्ट्रॉनिक भुगतान की सुविधा।
- वस्तुओं की खोजबीन हेतु बार–बार बाजार जाने–आने में समय व पैसे की बचत।तरह–तरह की छूटों की जानकारी का लाभ।

विक्रेता व कम्पनियों को होने वालों लाभों की सूची :

- ✓ उत्पादों, वितरकों व अन्य व्यापारिक सहयोगियों से व्यापारिक सूचनाओं का आदान–प्रदान एवं व्यापारिक खर्चो में कटौती।
- ✓ वस्तुओं, उत्पादों व सेवाओं की अधिक जानकारी प्रदान करने की क्षमता में विकास।
- ✓ व्यापार चक्र की गतिविधियों में तीव्रता।
- ✓ वस्तुओं व उत्पादों की आपूर्ति में तीव्रता।
- ✓ नये बाजारों व ग्राहकों तक पहुँचने हेतु आसानी।
- ✓ ग्राहकों की संतुष्टि हेतु, सेवा में सुधार के अवसर।
- ✓ वस्तुओं के ''ब्राण्डों'' की छवि में सुधार।
- ✓ व्यापार हेतु अधिक समय।
- ✓ नये उत्पादों, वस्तुओं व सेवाओं को सम्मिलित करने में आसानी।
- ✓ ग्राहक से बेहतर सम्बन्धों की स्थापना।
- ✓ शो–रूम आदि हेतु ढांचागत खर्चों में कमी।
- ✓ नए व्यापार की सम्भावनाएँ।
- ✓ दस्तावेजों में आँकडों की शुद्धता।

ई–जर्नलिज़्मः

वे पत्र–पत्रिकाएँ जो कि इलेक्ट्रानिक स्वरूप में ही वितरित किए जाते हैं, ई–जर्नल्स कहलाते हैं। यह इंटरनेट पर उपलब्ध रहते हैं तथा इंटरनेट के विविध उपकरणों जैसे–www,gopher,ftp,tilnet,e-mail याlistserveद्वारा इनका अभिगम किया जाता है। ADONIS के प्राचीन स्वरूप का विकसित स्वरूप ही ई–जर्नल्स हैं। वर्तमान समय में लगभग 10332 सामयिक प्रकाशन अलरिच

अंतर्राष्ट्रीय धारावाहिक निर्देशिका में ई–जर्नल्स के रूप में दर्शाए गए हैं। प्रत्येक विषय पर विविध प्रकार के ई–जर्नल्स की संख्या निरंतर बढ़ती ही जा रही है।

ई–बुक्सः इंटरनेट पर किताबों को प्रकाशित करने को ई–प्रकाशन कहा जाता है तथा प्रकाशित पुस्तक को ई–बुक कहते हैं। पुस्तकों का डिजिटल संस्करण जो कि इलेक्ट्रानिक है तथा इंटरनेट के माध्यम से पढ़ा जा सकता है। इनमें से कुछ प्रारंभ से ही इलेक्ट्रानिक रूप में सृजित किए जाते हैं तथा दूसरे लोकप्रियता के आधार पर मुद्रित संस्करण के साथ ही इलेक्ट्रानिक रूप से तैयार किए जाते हैं। इनके विविध प्रारूप होते हैं जोकि संस्करण से पठनीय मुद्रित एवं संप्रेषणीय होते हैं।

इलेक्ट्रानिक प्रकाशन के लिए अधिक सामान अथवा तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता नहीं है। मात्र पाठ्यक्रम को डिजिटाइज करने की सुविधा होनी चाहिए। क्योंकि कम्प्यूटर डिजिटल या अंकीय माध्यम या भाषा ही समझता है अतः हमें जहाँ भी कम्प्यूटर की मदद लेनी होगी, सामग्री को डिजिटल रूप में ढालना आवश्यक होगा।

आज कम्प्यूटर के आने से प्रिंटिंग का काम आसान हो चुका है। इंटरनेट और वेबसाइट के प्रसार और इसके उपभोक्ताओं की बढ़ती संख्या ने यह तय कर दिया है कि अब साहित्य, विज्ञान, कला, संस्कृति, समाजशास्त्र जैसे विषयों की किताबों की इलेक्ट्रॉनिक प्रिंटिंग होगी। इसी कारण हम कम्प्यूटर माध्यम से संबंधित वेबसाइट पर जाकर पढ़ सकेंगे।

इलेक्ट्रॉनिक अखबार :

डिजिटल टैकनालॉजी की मदद से इलेक्ट्रॉनिक अखबार घर–घर पहुँचने लगेंगे। नवीनतम सूचनाओं का समावेश उनमें सदैव होता रहेगा। मीडिया प्रयोगशाला के विशेषज्ञों का मानना है कि परम्परागत अखबार काफी सस्ता होगा। इसमें भी समाचार, फीचर्स और अन्य उपयोगी सूचनाएँ अद्यतन रूप में

उपलब्ध होती रहती हैं। नेत्रहीनों के लिए निकलने वाला '' द गर्जियन'' का संस्करण भी इलेक्ट्रॉनिक पद्धति से प्रसारित होता है और अपने पाठकों को कम्प्यूटर की आवाज में जोर से पढ़कर सुनाया जाता है।

जैसी खबरें चाहो वैसी हाजिर –

परम्परागत और इलेक्ट्रॉनिक अखबार में एक समानता होगी– दोनों के सूचना स्त्रोत एक जैसे होंगे, किन्तु इलेक्ट्रॉनिक अखबार में समाचारों के मानदण्ड बदल जाएँगे। इलेक्ट्रॉनिक अखबार में व्यक्ति विशेष की रुचियों के अनुरूप खबरों का खुलासा रहेगा। इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली हमारी नजर पर पैनी नजर देर तक टिकेगी, अखबार खुद–ब–खुद उसी ढंग की खबरें हमारे सामने परोसेगा।

जिन खबरों या लेखों में हमारी रुचि होगी, उन्हें वह तत्काल छापकर भी दे सकेगा। अगर हमें नौकरी के विज्ञापन में रुचि हो तो उसे या विवाह के विज्ञापन में रुचि हो तो , बटन दबाते ही मनपसन्द विज्ञापन परदे पर चमकने लगेगा। यदि हमारी रुचि वर्ग–पहेलियों को हल करने में है तो इलेक्ट्रॉनिक अखबार में उसकी भी व्यवस्था है। एक इलेक्ट्रॉनिक पेन की मदद से हम मनचाहे ढंग से पहेलियाँ परदे पर ही हल कर सकते हैं।

ई–अखबारों की विकास यात्रा –

यह एकमात्र ऐसा माध्यम था जिसके प्रचार–प्रसार में किसी देश की भौगोलिक सीमाएँ आड़े नहीं आई। पाकिस्तान में टाइम्स ऑफ इंडिया की वेब साइट वैसे ही देखी जाती है जैसे भारत में डॉन या फ्राइडे टाइम्स। हिन्दी की जानकारियाँ पश्चिमी देशों में हिन्दी की वेब साइट जैसे– जागरण.कॉम वैसे ही देखते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी की दुनिया में इस नई तकनीक ने विश्व के लोगों को जितना करीब ला दिया है उतना करीब शायद ही किसी अन्य तकनीक ने लाने का प्रयास किया हो। इसमें वेब साइट जनरेट करने के कुछ ही देर बाद विश्व भर में कही भी देखा जा सकता है। अमेरिका में रहने वाले मुजफरपुर के

निवासी अपने शहर या गाँव की खबर हिन्दुस्तान टाइम्स में नहीं खोज पाएँगे लेकिन वह खबर जागरण.कॉम पर मिल जाएँगी। उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर की खबर टाइम्स ऑफ इंडिया के प्रिंट संस्करण में देखने को नहीं मिलेगी लेकिन जागरण.कॉम के साइट पर वह खबर बड़ी आसानी से उपलब्ध हो जाती है। हजारों मील की दूरी पर रहने वाले लोग भी अपने घर की खबरों से जुड़े रहते हैं।

अखबारों को नेट पर आने के बाद इसके विकास में नित्य प्रति नये–नये आयाम जुड़ते जा रहे हैं। भारत में अंग्रेज़ी ऑनलाइन पत्रकारिता और हिन्दी ऑनलाइन पत्रकारिता का अपना एक अलग–अलग संसार है और विकास की प्रक्रिया भी अलग–अलग ही है। अंग्रज़ी में ऑनलाइन पत्रकारिता की शुरूआत हिन्दी से पहले हुई। हिन्दी में फांट की समस्या और अन्य तकनीकी समस्याओं के कारण इस भाषा में इंटरनेट पर पत्रकारिता की शुरूआत काफी बाद में हो सकी। इस कारण अंग्रेज़ी में ऑनलाइन पत्रकारिता का इतिहास हिन्दी या अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के इंटरनेट पर आगमन से काफी पुराना है।

5.2 इंटरनेट पत्रकारिता में शिक्षा कीस्थितियाँ एवं वर्तमान संदर्भ :

आज के अखबार विचार और समाचारों की व्याख्यात्मक तथा खोजी रपटों के माध्यम से पाठकों को प्रस्तुत करते हैं। अब इंटरनेट, कम्प्यूटर के माध्यम से अखबारों के इंटरनेट संस्करण भी पाठकों के समक्ष आने लगे हैं। इंटरनेट पत्रकारिता से इच्छित खबरें,उनके विश्लेषण और पृष्ठभूमि की जानकारी कर सकते हैं।

आजकल हमें भारी–भारी किताबों को ढोने की आवश्यकता नहीं है। अनेकों प्रकाशन, जैसे विश्वकोश, पुस्तकें, जर्नल और पत्रिकाएँ कम्प्यूटर डिस्क अथवा सीडी–रोम के रूप में उपलब्ध हैं जिन्हें कम्प्यूटर पर पढ़ा जा सकता है। भारत की पहली ऑनलाइन लोकप्रिय विज्ञान पत्रिका है जो इंटरनेट और विज्ञान प्रसार

बुलेटिन बोर्ड सर्विस पर उपलब्ध है उसका नाम 'काम–काम'। विश्व भर में अनेकों संस्थानों द्वारा वैज्ञानिक विषयों पर आँकडा संग्रह विकसित किए गए हैं। देश इस समय विभिन्न नेटवर्कों के माध्यम से बड़े पैमाने पर नेटवर्किंग के मार्ग पर अग्रसर है।

इंटरनेट पत्रकारिता में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसन्धान परिषद् ने प्रयोगशालाओं में हो रहे विभिन्न अनुसन्धान एवं विकास कार्यों के बारे में प्रेस को जानकारी उपलब्ध कराने के लिए एक त्वरित सूचना सेवा(क्विक एक्सेस इन्फार्मेशन सर्विस) प्रारम्भ की है। इसके अतिरिक्त पर्यावरण सूचना प्रणाली से पर्यावरण सम्बन्धी विषयों पर सूचना प्रणाली से कृषि सम्बन्धी विषयों पर सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। विज्ञान प्रसार की सेवा से विज्ञान एवं प्रौद्योगिक से जुड़े विभिन्न विषयों पर सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती है।

डिजिटल लाइब्रेरी :इंटरनेट क्रांति ने सूचनाओं को इलेक्ट्रानिक रूप में आम आदमी तक सुलभ बना दिया है। अब लोग माँग के अनुसार सूचनाएँ कलात्मक दृष्टि से आकर्षक रूप में उपलब्ध है। सूचना टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में हाल की प्रगति से पुस्तकालय सेवाओं में वास्तव में भारी सुधार हुआ है। इसके प्रभाव से ही आज कागज रहित कार्यालय, डिजिटल लाइब्रेरी और वर्चूअल आभासीय पुस्तकालय सामने आए हैं। आने वाले दिनों में ज्ञान के प्रबंधन के कार्य से जुड़ा प्रत्येक व्यक्ति डिजिटल प्रक्रियाओं और डिजिटल पुस्तकालयों की शुरुवात होगी। ऊँचे दर्जे के ग्राफिक्स, रंगीन चित्रों, ध्वनि संकेतों और वीडियो क्लिप्स को अब काफी कम लागत पर बड़ी आसानी से देखकर और सुरक्षित भी रखा जा सकता है। इंटरनेट जो दुनिया में आपस में जुड़े अनगिनत कम्प्यूटरों के हजारों नेटवर्कस का विश्वव्यापी जाल हैं, सूचनाओं के प्रचार–प्रसार का एक सकुशल माध्यम बन गया है। हाइपर टैक्स्ट मार्कअप लैंग्वेज पर आधारित वर्ल्ड वाइड वेब टेक्नोलॉजी और अत्यधुनिक वेब ब्राउजर्स के विकास से सूचनाओं का उपयोग

करने वालों के इस्तेमाल के लिए बड़ा आसान इंटरफेस उपलब्ध हो गया है। डिजिटल लाइब्रेरी तो मल्टीमीडिया प्रणालियों के नेटवर्क का नाम है। किसी भी डिजिटल लाइब्रेरी में एक मीडिया सर्वर होता है जो उच्च रफतार नेटवर्क से जुड़ा रहता है। जहाँ परम्परागत पुस्तकालय में आने वालों को विभिन्न स्त्रोतों से भौतिक सामग्री उपलब्ध कराई जाती है, वहीं डिजिटल लाइब्रेरी बहुत से कम्प्यूटरों के समूह से सहेजकर रखी गई सूचनाओं का भंडार है जिसका उपयोग डिजिटल रूप में एक ही भंडार के रूप में किया जा सकता है। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के बर्कले डिजिटल लाइब्रेरी अलग–अलग सूचना स्त्रोतों का समूह है जो सूचनाएँ जुटाने वालों द्वारा उपलब्ध कराया जाता है जिसका उपयोग स्वतःसंचालित प्रणाली के माध्यम से किया जा सकता है। स्टैनफोर्ड डिजिटल लाइब्रेरी प्रोजेक्ट के अनुसार समन्वित डिजिटल लाइब्रेरी से एक ऐसा माहौल बनाया जा सकता है जिसमें निजी सूचना संकलन से लेकर परम्परागत पुस्तकालयों के संग्रहों और बड़े पैमाने पर डाटा संग्रह तक सब कुछ आपस में संबद्ध होंगे और इनका उपयोग वैज्ञानिक मिलकर कर सकेंगे। इसमें कई प्रकार की नई सेवाएँ उपलब्ध कराते हैं। इनके माध्यम से नेटवर्क के रूप में संकलित सूचनाओं को प्राप्त किया जा सकता है। जैसे हमारा गिलास खाली होने से पहले ही उसे हम पानी से भर देते हैं उसी तरह इस लाइब्रेरी में सूचनाएँ आवश्यकतानुसार उपयोग करने वाले के कम्प्यूटर स्क्रीन पर प्राप्त की जा सकती हैं।

इलेक्ट्रॉनिक पब्लिशिंग, इलेक्ट्रॉनिक स्टोरेज, प्रोसेसिंग और पाठ व चित्र सहित सूचनाओं के वितरण की प्रणालियाँ आज न केवल पूरी तरह व्यावहारिक रूप ले चुकी हैं बल्कि इनका उपयोग भी शुरू हो गया है। इससे सूचनाओं को तेज़ रफतार से खोजने की सुविधा भी एक अत्यन्त उपयुक्त समाधान है।

कार्य : डिजिटल लाइब्रेरी के मुख्य कार्य इस प्रकार है –

- सूचनाओं के विशाल भंडार तक पहुँच सुलभ बनाना।

- मल्टीमीडिया सामग्री जुटाना, नेटवर्क सुविधा।
- डिजिटल सामग्री के बारे में विशेष सन्दर्भ सेवा।
- उपयोग करने वालों के लिए सरल इंटरफेस उपलब्ध कराना।
- दीर्घ अवधि के लिए सूचना उपलब्ध कराने की व्यवस्था।
- स्थानीय/ बाहरी सामग्री के साथ सम्पर्क सूत्र उपलब्ध कराना, सामग्री को खोजने और पुनर्प्राप्ति की उच्च प्रणाली।
- परम्परागत पुस्तकालयों की सामग्री के संग्रह, विकास, संगठन,प्राप्ति और संरक्षण में मदद करना।
- संपादन, प्रकाशन, टिप्पणी करने और सूचनाओं के समन्वय में सहायता, निजी, सामुदायिक, व्यावसायिक और सार्वजनिक डिजिटल लाइब्रेरी संगठनों में तालमेल।

उपयोगिता : डिजिटल पुस्तकालयों के कुछ प्रमुख लाभ इस प्रकार हैं–

- विश्व भर में उपलब्धता,
- परम्परागत पुस्तकलायों में भौतिक रूप से एकत्र की जाने वाली सूचनाओं के मुकाबले कहीं अधिक सूचनाओं को सुलभ कराना,
- इसमें पुस्तके चुटकियों में इस्तेमाल की जा सकती है।
- अधिक उपयोग और ठीक से रख–रखाव की सुविधाओं के अभाव में तेजी से खराब हो रही दुर्लभ पुस्तकों का संरक्षण।
- ई–बुक्स और पत्रिकाओं में विभिन्न विषयों से सम्बन्धित ऐसे की–बोर्ड रहते हैं जिनकी सहायता से अन्य स्त्रोंतों तक पहुँचा जा सकता है।
- किसी भी पुस्तक को कई लोग एक साथ इस्तेमाल कर सकते हैं।
- धरोहर के संरक्षण का एक अच्छा उपाय।

उपयोगकर्ता : डिजिटल पुस्तकालयों का इस्तेमाल समाज के सभी वर्गों के लोग जाति, वर्ण, धर्म, आयु और लिंग के भेदभाव के बिना कर सकते हैं। घर में बैठे ही कोई भी व्यक्ति इनका फायदा उठा सकता है। इससे समय की बचत होती है। कोई भी शोध छात्र अब मुगलकाल में भूमि सुधार के बारे में दुनिया के किसी भी कोने में बैठकर अनुसन्धान कर सकता है। जरूरत सिर्फ इस बात की है कि डिजिटल लाइब्रेरी में इस विषय पर डिजिटल रूप में सूचनाएँ संगृहित कर दी जाएँ और उसे सबको पहुँच के दायरे में रख दिया जाए।

पुस्तकालय सेवाओं में इंटरनेट का प्रयोग :

संसाधन इलेक्ट्रॉनिक पुस्तक, इलेक्ट्रॉनिक पत्र–पत्रिका, डेटाबेस आदि किसी भी रूप में शिक्षा और सूचना आसानी से प्राप्त की जा सकती है। इंटरनेट ने एक नवीन सूचना समाज की स्थापना की है इसके आधारभूत उपकरणों जैसे इलेक्ट्रानिक मेल, फाइल ट्रांसफर, रिमोट लोगिन, गोफर, बेस तथा वर्ल्ड वाइट वेब के द्वारा सूचना पुनः प्राप्ति की गुणवत्ता में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इंटरनेट का उपयोग किसी पुस्तकालय के क्रियाकलापों में गुणवत्ता के साथ–साथ उत्पदकता में भी वृद्धि कर सकता है। पुस्तकालय प्रबंधन अधिग्रहण, प्रबंधन वर्गीकरण, संदर्भ तथा सूचना प्रदायक सेवाएँ, पत्र–पत्रिका प्रबंधन प्रशिक्षण तथा उपयोक्ता निर्देशन विकास में इंटरनेट का समुचित उपयोग किया जा सकता है।

इन्टरनेट पर शब्दकोश और विश्वकोश :

अच्छे लेखन के लिए तथा लिखे हुए को अच्छे ढंग से समझने के लिए प्रायः शब्दकोशों की आवश्यकता होती है। अब कम्प्यूटर पर ही ढेरों, विभिन्न भाषाओं के शब्दकोश उपलब्ध हैं। कम्प्यूटर पर उपलब्ध संस्थापन योग्य तथा ऑनलाइन शब्दकोशों के द्वारा शब्दों को ढूँढ़ा जाना न सिर्फ आसान होता है, वरन् कई प्रकार के सहायक अनुप्रयोगों यथा ' काट तथा चिपका' इत्यादि का उपयोग कर अपने कार्य को और भी आसान बनाया जा सकता है। हर प्लेटफार्म

चाहे विंडोज 98/विंडोज–एक्सपी हो या लिनक्स के लिए अंग्रेज़ी–हिन्दी समावेश तो करते ही हैं, हमें नई सुविधाएँ नए व सरल तरीके भी प्रदान करते हैं।

उपयोग के लिए अंग्रेज़ी–हिन्दी शब्दकोश निम्नलिखित रूपों में उपलब्ध है–

- कम्प्यूटर में योग्य प्रोग्राम।
- डाउनलोड योग्य शब्दकोश फाइलें ।
- ऑनलाइन शब्दकोश और विश्वकोश।

विकीपीडिया में योगदान :चूँकि विकिपीडिया का एक मुक्त विश्वकोश है, अतः इसमें कोई भी अपने लेखों को शामिल कर सकता है। हालांकि विकीपीडिया एक ऑनलाइन व्यवस्था है, जहाँ पर हम सीधे ही सम्पादन कर अपनी योग्यता दर्शा सकते हैं। विकीपीडिया में अपने लेखों को सम्मिलित करने या लेखों का सम्पादन करने हेतु किसी विशेष, विस्तृत तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता नहीं है। वे पृष्ठ उपयोग की सामान्य जानकारी से ही विकीपीडिया पर समस्त कार्य किए जा सकते हैं। किसी प्रकार की कठिनाई आने पर यहाँ से मदद भी ली जा सकती है, जहाँ हमको विकीपीडिया के उपयोग तथा उसमें अंशदान देने हेतु सरल, चरणबद्ध तरीके से समझाया गया है। विकीपीडिया पर सरलतापूर्वक कार्य करने हेतु प्रायः सभी भाषाओं में उनके अलग–अलग उपकरण मौजूद है।

वर्तमान समय में प्रौद्योगिकी के विकास के चलते संचार के क्षेत्र में आए नव्य जनसंचार माध्यम के अन्तर्गत वेब पत्रकारिता के आगमान से इस दिशा में भी सरकार ने कुछ नीति नियम निर्धारित 'सूचना प्रौद्योगिकी कानून–2000' के नाम से पारित इन नीति नियमों के अन्तर्गत जहाँ ई–दस्तावेजों तथा ई–हस्ताक्षरों को कानूनी मान्यता मिल गई है वहीं इसके प्रयोग के लिए कुछ नियमों का निर्धारण भी किया है। इन नियमों का पालन न करने वाले व्यक्ति को आई. टी. एक्ट की विभिन्न धाराओं के तहत सजा के प्रावधान भी निश्चित किए गए हैं। ई–पत्रकारिता में पत्रकार की भूमिका अहम होती है। एक अच्छा पत्रकार जनता

के सुख–दुख का साक्षी है। जनता के प्रति हो रहे अन्याय और अत्याचार को वह वाणी देता है। वह शासन के सूझ–बूझ की तारीफ करता है साथ ही शासन की कमियों और अदूरदर्शिता के कारण उत्पन्न कठिनाइयों पर उंगली उठाता है। वह इस बात का भी ध्यान रखता है कि जनता की विभिन्न कठिनाइयाँ हैं तथा इसका भी शासन की भी सीमाएँ है। वह एक तरफा बात नहीं करता । सिक्के के दोनों पहलुओं को सामने रखता है, फिर उसकी समीक्षा करता है, उस पर अपना मत व्यक्त करता है। शान्त समुद्र के अन्दर लहरें चलती हैं। उसे समाज के प्रहरी की भाँति कार्य करना है। उसे उन सारी बातों की जानकारी रखनी है, जो समाज की शान्ति, सुरक्षा और व्यवस्था के लिए खतरा है और उनसे समाज के कर्णधारों और शासन को आगाह करना है।

इंटरनेट पर हिन्दी की प्रस्थिति :विश्व की पहली वेबसाइट 'नयी दुनिया डॉट काम' पहली बहुभाषी ई–मेल सेवा ' ई–पत्र' और प्रथम हिन्दी पोर्टल 'वेब दुनिया डॉट काम' इन्टरनेट पर लाया गया। आज विभिन्न रूपों में हिन्दी इंटरनेट पर हावी है। भारतीयों ने तो इंटरनेट पर हिन्दी के विविधतापूर्व स्वरूप को स्वीकार किया ही है, दूसरे देशों के लोगों ने भी हिन्दी के प्रति अपनी आस्था प्रकट की है। हिन्दी के इंटरनेट पर उपलब्धता ने हिन्दी साहित्य को विश्व सहज ही सुलभ करा दिया है। आज किसी भी विकसित या अविकासशील देश में बैठा व्यक्ति इंटरनेट पर हमारी किसी पत्रिका का ताजा अंक पढ़ सकता है और तुरन्त ही उस पर अपनी प्रतिक्रिया भी दे सकता है। यही नहीं इंटरनेट के माध्यम से पुस्तकों का व्यापक प्रचार संभव हो गया है। इन्हीं उन कारणों से साहित्य के लिए इंटरनेट को शुभ माना जा रहा है। इससे न सिर्फ हिन्दी के लेखकों का आर्थिक पक्ष मजबूत होगा, बल्कि हिन्दी साहित्य विश्व भर में अपनी पहचान स्थापित कर सकेगा। वरिष्ठ कथाकार कमलेश्वर के शब्दों में –

''इंटरनेट पर एक प्रति संसार पैदा हो रहा जिसमें सभी जानकारियाँ एक साथ उपलब्ध हैं। अब हम जैसे लोगों को एक बड़ा संदर्भ खंड बनाने की जरूरत नहीं है। शब्दों की सारी दुनियाँ उंगालियों पर सिमट गई हैं।'' ***1**

इंटरनेट पर अनुवाद के बढ़ते चलन के कारण राष्ट्रीय सौहार्द एवं सद्भाव बढ़ रहा है। गूगल, इंटरनेट का एक महत्वपूर्ण अंग है। गूगल पर तेरह भारतीय भाषायें हैं। जिससे अनुवाद का कार्य आसान हुआ है। हिन्दी पाठक अनुवाद के माध्यम से किसी भी भाषा की सामग्री को गूगल के जरिए पढ़ सकते हैं। आज इंटरनेट के इस जमाने में भाषा के साथ अनुवाद का नया प्रयोग इसको एक मुहावरा दे रहा है। जनसंचार के अनेक माध्यमों द्वारा हमें पूरे विश्व के साथ जोड़कर एक नई भाषायी संरचना के नये प्रतिमान स्थापित करता हुआ दिखाई देता है। भारत में इन्टरनेट या साइबर पत्रकारिता अभी शैशवकाल में है, फिर भी देश के अधिकांश दैनिक, साप्ताहिक और मासिक, पत्र–पत्रिकाओं के संस्करण इंटरनेट पर उपलब्ध है।

ऑनलाइन संस्करणों में शामिल पत्र–पत्रिकाएँ : –

समाचार वेब–पटल, जनोक्ति, हिंदी शिल्पी, हिंदी नेस्ट, अनुभूति, अभिव्यक्ति, प्रवक्ता, अनुरोध, हिन्दी चेतना, लेखनी, साहित्य–वैभव, महडिया, विमर्श, मिलनसार, हिन्दी समय, हिन्दी युग्म, प्रतिलिपि, हिन्दी साहित्य मंच, रचनाकार, द हिन्दू, हिन्दुस्तान टाइम्स, हिन्दुस्तान, टाइम्स ऑफ इण्डिया, नई दुनिया, राजस्थान पत्रिका, न्यूज इण्डिया टाइम्स, चौथी दुनिया, अमर उजाला, प्रतिदिन, इंडिया टुडे, जागरण, समेत सैकड़ों आदि ।

इसमें देशी तथा विदेशी हिन्दी पाठकों की संख्या में दिन–प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। इंटरनेट और वेबसाइट की सुविधा ने पत्र–पत्रिकाओं के ई–संस्करण तथा पूर्णतः ऑनलाइन पत्र–पत्रिकायें उपलब्ध कराकर सर्वथा नई दुनिया के

दरवाजे खोल दिये हैं। सरल हिन्दी डॉट कॉम वेबसाइट पर हिन्दी शीर्षक के अंतर्गत हिन्दी विकीपीडिया , हिन्दी के साधन, हिन्दी जाल निर्देशिका तथा यूनिकोड संबंधी जानकारी प्राप्त होती है। हिन्दी बोलने–पढ़ने वाले कस्बों–गाँवों में तो अब भी नेट पहुँचना बाकी है, अभी सामान्य जनमत इसके पहुँचने पर हिन्दी और समृद्धि होगी। यह ऐसा ही होगा जैसे केबल गाँवों में पहुँचा तो टी.वी के धारावाहिक भी उनकी कहानियाँ कहने लगे।

तकनीकी विकास की सीमाएँ :

जिस प्रकार सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार तकनीकी विकास हमारे लिए कुछ मायनों में अभिशाप भी है। वेब पर अपार शिक्षण सामग्री और ज्ञानवर्धक साहित्य भी उपलब्ध है। इंटरनेट का अत्यधिक प्रयोग हो रहा है। अक्सर लोग इस पर लगातार चैट करते रहते हैं या गाने सुनते रहते हैं। इसके कारण लोगों के कानों पर असर पड़ रहा है। दुनिया छोटी हो गई है परंतु इसकी वजह से व्यक्ति इतना व्यस्त हो गया है कि वह आस–पास के लोगों की समस्याओं से बेफिक्र रहने लगा है। बच्चे अपने मित्रों से बात करने में इतना समय निकाल देते हैं कि अपने माता–पिता, भाई–बहन या अपने आत्मीय जन के साथ आपस में बात–चीत करने के लिए उनके पास समय नहीं रहता ।

संगणक का अधिक प्रयोग करने से आदमी को गरदन, पीठ की पीड़ा परेशान करती है। आँखों पर कुछ ज्यादा ही तनाव पड़ता है। इंटरनेट पत्रकारिता को प्रयोग करनेवाले हरेक व्यक्ति उसके बारे में जानकारी नहीं जानते, इसलिए कभी–कभी ऐसा समय भी आता है जब तक उसके बारे में जानकारी नहीं होते तब तक वे ठप हो जाते हैं। नेट पर किसी विषय को तलाशने की प्रक्रिया मनोरंजक नहीं है बल्कि कई बार उबानेवाली भी सिद्ध होती है। उदाहरण के लिए यदि हम कफद शब्द टाइप करके उन्हें तलाषें तो हो सकता है कि ऐसा करीब एक लाख साइट हमारे सामने आ जाएँ जिनमें उन

शब्दों का प्रयोग हुआ है। यदि कनेक्टिविटी थोड़े से समय के लिए भी बंद पड़ जाए तो हमारा काम रुक जाता है। इसी वजह से कभी–कभी हम दूसरों पर भी निर्भर होते जा रहे हैं। इसके साथ ही नियंत्रण का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। तेज गतिवाले वाहन पर यदि चालक का नियंत्रण नहीं रहा तो सत्यानाश हो सकता है। इतना ही नहीं ये सारी चीज़ें खर्च का बोझ भी बढ़ाता है। इंटरनेट के सामने बैठकर हम भोजन करते हैं, क्या खाते हैं, कितना खाते हैं, इसका कोई हिसाब नहीं रहता जिसका भयंकर परिणाम मोठापे के रूप में सामने आता है। बच्चों में यह समस्या बढ़ती जा रही है। परिवार में आपस में बातें करना, सलाह मशविरा करना आदि तकनीकी विकास के कारण कम हो गया है। विश्व छोटा तो हो गया है, पर कभी–कभी लगता है कि एक ही घर में रहने वाले दो व्यक्तियों के बीच का अतुर बढ़ गया है।

इसका अर्थ यह नहीं कि हमें विकास की ओर नहीं बढ़ना चाहिए। विकास के बिना तो हम पिछड़े जाएँगे। किन्तु तकनीकी विकास के जरिए जो साधन हमें प्राप्त होते हैं उनका समुचित उपयोग करना तो हमारे हाथ में है। किसका कितना और किस प्रकार उपयोग किया जाना चाहिए इसके बारे में हमें सोच समझकर निर्णय लेना चाहिए। ऐसा करने पर ही हम तकनीकी विकास के लाभों को ग्रहण करने के साथ–साथ इससे होनेवाली हानियों को कम कर सकते हैं। सारांश यह है कि तकनीकी विकास तभी तक वरदान के रूप में हमें लाभी पहुँचाता रहेगा जब तक हम इसके गुण–दोषों को अच्छी तरह से समझकर इसका उपयोग करते रहेंगे। ऐसे ही इंटरनेट के द्वारा शिक्षा का प्रचार–प्रसार हमारे ऊपर निर्भर हैं कि हम उसे अच्छी तरह समझकर उसका फायदा उठाना चाहिए। ताजा अध्ययन के अनुसार इंटरनेट प्रेमियों की संख्या में प्रतिवर्ष 30 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हो रही है। अन्ततः कहा जा सकता है कि इंटरनेट पर शिक्षा समृद्ध होती जा रही और उसका भविष्य उज्जवल है। साहित्य

रचनाकार, पत्रकारिता से संबंधित लोगों, साहित्येत्तर प्रेमियों को इंटरनेट का ज्ञान होना आवश्यक है जिससे वे इस तकनीक का अधिक से अधिक उपयोग कर सकें और इंटरनेट पर शिक्षा के प्रचार–प्रसार में अपना योगदान दे सकें। अब एसएमएस पत्रकारिता से भी समाचार आदान–प्रदान होता है। यूरोप और उत्तरी अमेरिका में एस एम एस पत्रकारिता काफी तेजी से विकास के नित नए सोपान चढ़ रहा है। अनेक समाचार पत्रों व पत्रिकाओं ने इंटरनेट के अतिरिक्त एस एम एस पत्रकारिता प्रारंभ कर दी है और एक स्वतंत्र एस एम एस वेब साइट बड़े पैमाने पर स्वरूप ग्रहण करने लगा है। इसके अतिरिक्त चूंकि एस एम एस मोबाइल फोन की तरह ही मोबाइल रहते हुए समाचार उपलब्ध कराने में सक्षम है, और आने वाला कल इसी का है। इसके द्वारा शिक्षा का प्रचार–प्रसार भी बढ़ता ही है।

संदर्भ एवं सहायक ग्रंथ सूची––पंचम अध्याय

*1आजकल, जुलाई 2003, पृ.सं. 11।

❖ इंटरनेट और आधुनिक पुस्तकालय, डॉ. शंकर सिंह, आर. के. ऑफसेट, दिल्ली– 110 032

❖ इंटरनेट पत्रकारिता, विनय श्रीवास्तव, डीम बुक सर्विस, दिल्ली– 110 032, 2009

❖ जनसम्पर्क, पत्रकारिता और सूचना क्रांति, एम.के गुप्ता, आविष्कार पब्लिशर्स, जयपुर–302003,2005

❖ जनसंचार के सामाजिक संदर्भ, जवरीमल्ल पारख, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लिमिटेड, दरियांगज, नई दिल्ली– 110002

❖ जनसम्पर्क विज्ञापन एवं प्रसार माध्यम , एन.सी.पंत, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली–2, 2004

❖ देसी सूचना विकास पत्रकारिता को पुष्ट करती वेबदुनिया, डॉ. कुलदीप शर्मा, ब्राठट बुक्स, दिल्ली–110051, 2011

❖ नया मीडिया और नये मुद्दे, सुधीश पचौरी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली– 110 002, 2009

❖ पत्रकारिता और पत्रकारिता , डॉ. अरूण जैन, हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, 1998

❖ पत्रकार और पत्रकारिता प्रशिक्षण, अरविन्द मोहन, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली–110002, 2005

❖ पत्रकारिता के विविध आयाम, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, डॉ. देवीसिंह राठौर, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली– 110002, 2003

❖ माडिया और प्रसारण, डॉ. रमेश मेहरा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली– 110002, 2007

❖ मीडिया लेखन के सिद्धान्त, एन.सी.पंत, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली– 110002, 2007

❖ मीडिया मिथ्स और मूल्य, देवेन्द्र इस्सर, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, के– 71, कृष्णनगर, दिल्ली–110051, 2008

❖ समाचार–लेखन के सिद्धान्त और तकनीक, संजीव भानावत, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, जयपुर

❖ सूचना क्रांति और विश्व भाषा हिन्दी, प्रो. हरिमोहन,तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली–110002, 2004

❖ सूचना प्रौद्योगिकी, सुजित मिश्रा, पवन पब्लिकेशन, नई दिल्ली–45, 2009

❖ सत्ता, साहित्य और पत्रकारिता, आलोक पाण्डेय, मिलिन्द प्रकाशन, हैदराबाद–500095, 2009

❖ सूचना प्रौद्योगिकी और समाचार –पत्र, रवीन्द्र शुक्ल, राधाकृष्ण, नई दिल्ली, 2007

❖ सम्पूर्ण पत्रकारिता , डॉ. अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी– 221001, 2005

❖ संचार क्रांति और विश्व जनमाध्यम, डॉ. अनिल अंकित, भारत बुक सेण्टर, लखनऊ

❖ समाचार संकलन एवं संपादन, विजय शर्मा, इशिका पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2012

❖ साइबर–स्पेस और मीडिया सुधीश पचोरी, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली– 30, 2000

❖ समाचार चयन, राजेन्द्र राही, संजय बुक सेन्टर, के. 38/6, गोलघर, वाराणसी–221001, 2003

❖ सूचना प्रौद्योगिकी की रोचक बातें,देवव्रत द्विवेदी ,अचैना पब्लिकेशन, 9, महिलाग्राम कालोनी, सूबेदारगंज, इलाहाबाद, 2007

❖ हिन्दी पत्रकारिता की दिशाएँ, जोगेन्द्र सिंह, सुरेन्द्रकुमार एण्ड सन्ज़, दिल्ली–110032, 2004

❖ हिन्दी पत्रकारिता का बाजार भाव, जवाहरलाल कौल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली–110002, 2000

पत्र–पत्रिकाएँ

➢ आगम सोची, सौरभ नगर रीवा, मध्य प्रदेश–486001।

➢ सुलभ इंडिया,83,महावीर इन्क्लेव, पालम–डाबड़ी मार्ग,नई दिल्ली–45।

➢ समाचार पत्र

➢ 1.दि टाइम्स ऑफ इण्डिया

- 2.दि हिन्दू
- 3.मलायल मनोरमा
- 4.नवभारत टाइमस